ॐ DATE 9/1/2008

बुधवार

युवा शक्ती

॥ गहन ध्यान अनुष्ठान ॥

सभी परमात्माओ को मेरा नमस्कार – – –

यह युवा वर्ष आपके जिवन मे आध्यात्मीक निंव डालने का वर्ष है। निंव जितनी मजबुत होगी इमारत उतनी ही उंची होगी। मेरे जिवन का उद्देश आपके जिवन के लिये "समर्पण ध्यान" की मजबुत निंव डालना था, वही कार्य की पुर्णाहुती इस वर्ष के गहन ध्यान अनुष्ठान मे होने वाली है। इस लीये यह गहन ध्यान अनुष्ठान जो २० जनवरी 2008 से आरंभ मे होने जा रहा है, वह 45 दिन मे 45 आहुतीयो के साथ 6 मार्च महाशिवराजी के दिन सपूर्ण होगा। यह सपूर्ण अनुष्ठान केवल आप ही के लिये किया जा रहा है। केवल आप को इसे ग्रहण करना है। इन 45 दिनो मे क्रमबद्ध तरीके से लयबद्ध तरीके से आपको मेरी सारी सामुहीक शक्तीया समर्पीत करने जा रहा हु। जो भी मैंने मेरे जिवन मे पायी है। कयोकी कुछ भी लेकर मैं यहा से जाना नही चाहता हु। आपको केवल उन शक्तीयो को ग्रहण करना है। आप यह बहुमुल्य अवसर न चुके इसी लीये यह पूर्व से सुचित कर रहा हु।

20 जनवरी से 45 दिनो तक अपने चित्त पर केवल नियंत्रण रखे, उसे किसी के भी दोषो पर न जाने दे। किसी भी जिवन की समस्या पर न जाने दे, सारी समस्याऐ मुझे सौंप दे, मैं उन्हे अग्नी मे समर्पीत कर दुंगा। पर आप को सौंपना भर है। कृपया समस्या को पकड कर न रखे. 45 दिन बाद आप देखेगे आप मेरे जैसे समस्या रहीत हो जायेगे.

सभी आसक्तीया शरीर की होती है, इस लीये सारी आसक्ती मे से अपने चित्त को बचाइये आसक्ती ही चित्त को कमजोर करती है,
मेरे जिवन मे आध्यात्मीकता की निव "पवीत्रता" से रखी गयी है, अपने चित्त को पवीत्र रखे तो मन और शरीर भी पवीत्र होगा, मैने मेरे जिवन मे जो भी पाया वह सब पवीत्र चित्त के कारण ही हो सका, चित्त पवीत्र रखने के लीये मुझे प्रार्थना करे, मेरी सामुहीक शक्ती के सामने रोये गिडगीडाये, यह रोना, और गिडगीडाना आपके भितर के "मै" के अंहकार को चुरचुर कर देगा, और आपका चित्त शुद्ध हो जायेगा, आप स्वयम भी इसका महसुस करेगे, "गुरुचरण" पर चित्त रख की गयी प्रार्थना ही चित्त को शुद्ध कर सकती है,
"सुख" और "सुविधा" दो शब्द समान से लगते है, पर समान है, नही दोनो मे जमीन आसमान का अंन्तर है, "सुख" आत्मा का निर्मल आनंद है, जो खरीदा नही जा सकता है, वह कोई दे नही सकता और नही कोई शरीर पा सकता है, सुख शरीर से प्राप्त ही नही होता आप शरीर उसे प्राप्त ही नही कर सकते वह तो परमात्मा की असीम कृपा मे ही बरसता है, सुख परमात्मा की वह अमृत वर्षा है जो परमात्मा के सानीध्य मे ही प्राप्त होती है, फीर आप योग्य हो अयोग्य हो कोई मायना नही है आप लडका है, आप लडकी है, कोई मायना नही है मायना है, आप अपना अस्तीत्व भुलाकर परमात्मा के सानीध्य मे हो, सुख वास्तव मे परमात्मा का सानीध्य है, परमात्मा आत्माओ का समुह है, और जो शरीर अपना अस्तीत्व आत्माओ के समुह मे डाल देता है वह परमात्मा मय हो जाता है इस लीये हमे वह परमात्मासा लगता है,

यह लगना ही आत्मा का सुख है, और जब यह सुख आत्मा अनुभव करता है। तो आत्मा शक्तीशाली हो जाता है। और आत्मा का नियंत्रण शरीर पर हो जाता है, और आप की आत्मा ही आप का "गुरू" पथ प्रदर्शक हो जाती है। और आप सब इन 45 दिनो के अनुष्ठान मे अपने स्वयम के "गुरू" हो जाये यही उद्देश से यह अनुष्ठान का आरम्भ कर रहा हु। जब आप ही आप के गुरू हो जायेगे तो ही "मै" कौन हु और मेरा आप से क्या सम्बन्ध है, और कितना पुराना नाता है, सब ज्ञात हो जायेगा, सारा ज्ञान आपको भितर से ही होना प्रारम्भ हो जायेगा, सांसारीक जिवन मे आप जिसे सुख समझते है। वास्तव मे वह सुख नही है। वह भौतिक सुख सुविधाऐ है। जो शरीर को आराम देती है अच्छा आसन, अच्छा वाहन, अच्छा घर, यह सब सुविधा दे सकता है, पर सुख नही। यह सब पैसो से खरीदा जा सकता है। दिया जा सकता है किया जा सकता है पर यह सब शरीर से ही संम्बन्धीत होती है, एक मनुष्य के पास यह सारी सुविधाऐ हो तो आवश्यक नही की वह मनुष्य "सुखी" ही हो पर आत्मीय सुख प्राप्त व्यकती के पास सुख और सुविधा दोनो होती है यह समझो सुख भितर का होता है सुविधा बाहर की होती है सुखी व्यकती को सुविधाऐ ऐसे ही प्राप्त हो जाती है पर सुविधा प्राप्त व्यकती को "सुख" प्राप्त होगा ही है ऐसा नही है यह मेरा निजी अनुभव है इस लीये आप सुख प्राप्त करे जिवन मे सुविधाऐ तो ऐसे ही मिल जायेगी, और जिवन मे अगर सुविधाओ के पिछे भागे तो न सुविधा मिलेगी और न सुख क्योकी सुविधाओ का कोई अंन्त नही है, सुविधाओ की यात्रा एक अंन्त हीन सफर है।

आगामी 45 दिन आपके जिवन के निर्णायक दिन है, इन दिनो मे चित्त सुरव पर ही रखो सुविधाओ पर नही, मैंने मेरा सारा अस्तीत्व आप मे बांट दिया है, मै आप सब मे हु, आप उसे अनुभव करो, "मैं" हु। बस अनुभव करने की आवश्यकता है।

प्रत्येक "स्त्री" शक्ती का स्वरुप है, आप प्रत्येक "स्त्री" मे उस शक्ती के दर्शन करो, "अरे बाबा पत्नी भी क्षणभर की प्रेयसी व अंनतकाल की माता ही होती है" स्त्री से पवीत्र संम्बध बनाओ और माँ से पवीत्र कोई सम्बध इस दुनीया मे नही है। आप 45 दिन कर के तो देखो प्रत्येक स्त्री मे "माँ कुंडलीनी" नजर आयेगी, जब यह दर्शन मैं कर सकता हु तो आप क्यो नही। "स्त्री" का शरीर शक्ती का सुचालक है, वह शक्ती केवल ग्रहण ही नही करता संजोता है, निर्माण करता है, और प्रसारित करता है, स्त्री शक्ती पर रखी गयी तुम्हारी अच्छी या बुरी इच्छी तुम्हे बना या बिगाड सकती है "स्त्री शक्ती स्वरुपा थी है, और रहेगी," बांटना स्त्री का मुल स्वभाव है। वह खाने से ज्यादा परोसने मे ही आंनद प्राप्त करती है। यह प्रत्येक स्त्री मे नैसर्गिक रुप से होता है।

यह गुण जब तक आप ग्रहण न करो पुर्णत्व की प्राप्ती नही हो सकती है, अनुष्ठान की गहन प्रक्रिया मे मै आप सभी को अपने चित्त मे लेकर गहन ध्यान मे जाऊगा वह इस बार "गुरुलोक" की यात्रा है, इन अनुष्ठान का एक एक क्षण महत्वपुर्ण है, इसका पुर्ण एहसास मुझे है, मै बस आपको कराना चाहता हु, आप सभी को इस यात्रा मे मै आमंत्रीत करता हु, और आशा करता हु। इस अनुष्ठान के महत्व को समझ कर आप इसमे शामील होंगे,

यह गहन ध्यान अनुष्ठान महाशिवरात्री के दिन सपुर्ण होगा। यह महाशिवरात्री का पावन पर्व आपके जिवन मे आत्मा के उत्थान का पर्व होगा आपके शरिर पर आपकी आत्मा का नियत्रंण होगा, आप ही आप के गुरु हो जाओगे, फिर जिवन मे शरीर जो क्रान्ती नही आ पायी वह आत्मा के प्रभाव से आयेगी, इन 45 दिनो मे आप आपकी उर्जा शकती को केन्द्रीत कर केवल "गुरु-चरण" पर रखीये।
बस आपको केवल यही करना है, बाकी सब तो ईश्वर कृपा मे हो जायेगा, मुझे आप ही से आशा है, अगर विश्व मे विश्वशान्ती की शुरवात होगी तो आप ही के द्वारा हो सकेगी, क्योकी उसके लिये साधना चाहिये और साधना के लिये समय चाहिये। आप युवा हो आप के पास समय का बहुमुल्य धन है। उस धन के प्रत्येक क्षण को "सकारात्मक सामुहीकता" मे जोडिये, आप के साथ के बिना मेरा कोई अस्तीत्व ही नही है मुझे इस पावन कार्य मे आपका साथ चाहिये। आप मे से मै किसी को भी छोडना नही चाहता हुं, आप सब को साथ लेकर चलना चाहता हुं, मुझे आप पर पुर्ण विश्वास है, इन अनुष्ठान मे चित्त से आप सब मेरे साथ होगे ही, इसी शुभ इच्छा के साथ,

आपका
बाबा स्वामी
9/1/2008